नामधारी सिक्ख क्या हैं

लेखक :-

मिहर सिंह (हाफ़िज़ाबादी)

प्रकाशक :-

नामधारी सभा, कानपुर ।



Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library has been created with the approval and personal blessings of Sri Satguru Uday Singh Ji. You can easily access the wealth of teaching, learning and research materials on Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library online, which until now have only been available to a handful of scholars and researchers.

This new Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library allows school children, students, researchers and armchair scholars anywhere in the world at any time to study and learn from the original documents.

As well as opening access to our historical pieces of world heritage, digitisation ensures the long-term protection and conservation of these fragile treasures. This is a significant milestone in the development of the Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library, but it is just a first step on a long road.

Please join with us in this remarkable transformation of the Library. You can share your books, magazines, pamphlets, photos, music, videos etc. This will ensure they are preserved for generations to come. Each item will be fully acknowledged.

To continue this work, we need your help

Your generous contribution and help will ensure that an ever-growing number of the Library's collections are conserved and digitised, and are made available to students, scholars, and readers the world over. The Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library collection is growing day by day and some rare and priceless books/magazines/manuscripts and other items have already been digitised.

We would like to thank all the contributors who have kindly provided items from their collections. This is appreciated by us now and many readers in the future.

Contact Details

For further information - please contact

Email: NamdhariElibrary@gmail.com

kirpal singh dhana

अपनी ओर से

"नामधारी सिक्ख क्या हैं" इस नाम से लिखी जाने वाली पुस्तक का आकार तो बहुत बड़ा होना चाहिये। अगर नामधारी पंथ का कोई विद्वान इस पुस्तक को लिखता तो वास्तव में ही कई हजार पृष्ट लिखकर भी वह महसूस करता कि अभी बहुत कुछ और भी लिखना बाकी है। एक एक सिद्धान्त पर कई कई पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। मैं तो एक कारो बारी आदमी हूँ और हिन्दी पढ़ा लिखा भी नहीं हूँ। हर दिन के व्योहार में बातचीत के दौरान उत्तर प्रदेश में बसने वाले लोग यह जानकर कि नामधारी सिक्ख मांस मदिरा का सेवन नहीं करते बहुत ही आश्चर्य मानते हैं और पूछने लगते हैं कि क्या कोई सिक्ख ऐसा भी हो सकता है जो मांस मदिरा का इस्तेमाल नहीं करता और कई सज्जन तो नामधारियों के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिये नये नये प्रश्न करते हैं। इस छोटी सी पुस्तक में मैंने लग भग वही कुछ लिखा है जो इन प्रश्नों के उत्तर में साधारणता उनको बताया करता हूं। इसमें ऐसा भी हो सकता है कि नामधारी पंथ के विद्वानों तथा नामधारी दरबार को इस पुस्तक में कई ऐसी बातें भी मिलें कि जो उनको प्रिय न हों क्योंकि मेरी जानकारी भी अल्प है और मेरा लिखने का ढंग भी सुन्दर नहीं है और मेरी बुद्धि भी मायकी है। नामधारी सिक्ख तो धर्म को प्रिय रखते हैं, प्राणी मात्र से प्यार करते हैं, जन सेवा को आदर्श भक्ति

मानते हैं और उनके आचार व्योहार अति श्रेष्ठ हैं नाम सुमिरन उनका आधार है और गुरुवाणी उनका जीवन है।

मैं इस पुस्तक में कई बातें केवल इसारा मात्र ही लिख पाया हूं कारण यह कि विस्तार पूर्वक लिखने में पुस्तक का आकार बढ़ जाने का भय था दूसरे यह भी कि इस पुस्तक लिखने का भाव नामधारियों के सिद्धान्तों को सिद्ध करना नहीं है वरन् केवल परिचय देना है। उत्तर प्रदेश में रहने वाले बहुत से लोग अधिक तर ऐसे सिक्खों से ही परिचित हैं कि जो मांस मदिरा का सेवन निसंकोच करते हैं और जो हवन यज्ञ आदि श्रेष्ठ कर्मों का सदा विरोध करने वाले हैं परन्तु इस पुस्तक को पढ़ कर वह यह जान जावेंगे कि नामधारी सिक्ख गुरु नानक देव जी के बताये हुये रास्ते पर दृढ़ता के साथ चल रहे हैं।

इस पुस्तक में किसी का दिल दुखाने की भावना से कुछ भी नहीं लिखा गया। फिर भी मैं उन सज्जनों से कि जिनके विचार मेरे इन विचारों से नहीं मिलते हैं क्षमा मांगता हूँ और विनती करूंगा कि वह इन विचारों को निसपक्ष होकर विचारने के बाद हो सके तो मांस मदिरा आदि का त्याग करके और गुरु की शरण में आकर नाम सुमिरन करें और इस अमूल्य जन्म को सफल बनावें।

कानपुर
ता० २० नवम्बर १९५५

दास मिहर सिंह

देश प्रेम

नामधारी सिख सम्प्रदाय का नाम देश भक्ति और देश के लिये अद्वतीय बलिदान के कारण देश भक्त संस्थाओं में सबसे पहला है। मगर फिर भी पंजाब प्रान्त के बाहर भारत की साधारण जनता में बहुत कम लोग हैं जो इनसे परिचित हैं। कई एक कारणों के साथ साथ इसका मुख्य कारण तो यह है कि अंग्रेजी शासन काल में जितने कड़े से कड़े प्रतिबन्ध 'इन देश भक्त, अहिंसा वादी, और साधू बृत्ति नामधारियों पर लगाये गये इतने दुनिया के किसी भी इतिहास में शायद ही मिलते हैं। आज से लग भग ६० वर्ष पहिले अंग्रेजों ने नामधारी संस्था को अंग्रेजी राज्य के बाग़ी होने के अलजाम में कुचल देने की ठान ली और नामधारी सिक्खों के सिरताज श्री सतगुरु रामसिंह जी महाराज (जो श्री गुरुनानक देव जी की गद्दी पर १२ वें गुरु हैं) को उनके २२बाइस सूबों (उनके नियुक्त किये हुये मुखियों) समेत देश के बाहर किसी अन जाने स्थान पर ले गये। कई नामधारियों को फांसी पर लटका दिया गया और कितनों को तोपों से उड़ा दिया गया। शेष सारे पंथ नामधारी समाज पर ही कड़ा प्रतिबन्ध लगा दिया गया। वह कहीं भी पाँच से ज्यादा इकट्ठे नहीं हो सकते थे गुरु ग्रन्थ साहिब का पाठ आदि करवाने के लिये जिलाधीश से आज्ञा प्राप्त करनी पड़ती थी। लड़की या लड़के, की शादी

करनी हो तो भी सरकार से आज्ञा लेनी पड़ती थी। नामधारियों के केन्द्र तथा श्री सतगुरु रामसिंह जी महराज के जन्म स्थान श्री भैनी साहिब गुरुद्वारा जिला लुधियाना पर पुलीस की चौकी बिठा दी गई और कड़ी निगरानी रक्खी जाने लगी। जब कोई नामधारी गुरुद्वारे के अन्दर दाखिल होता तो उसकी तलाशी लेली जाती। इसीप्रकार कई एक कड़े प्रतिबन्ध लगातार ५० वर्ष तक नामधारियों को सहन करने पड़े ऐसी अवस्था में नामधारियों के प्रचार का सवाल ही पैदा नहीं होता था और उस पचास वर्ष के कड़े प्रतिबन्ध के बाद भी जब कभी नामधारियों ने अपने इतिहास का कोई भाग प्रकाशित किया तो अंग्रेजी सरकार ने फौरन ही इसको जब्त करलिया।

सतगुरु रामसिंह जी महाराज ने जब भारत की जनता को एकता का संदेश दिया और धार्मिक प्रचार के साथ २ विदेशी राज्य से मुक्ति पाने के लिये सिक्खों को संगठित करने का प्रयत्न किया तो अंग्रेज जिनकी नीति ही (Devide and rule) फूट डालो और राज्य करो पर आधारित थी। भला इस बात को कैसे सहन कर सकते थे और संगठन भी उस सिक्ख जाति में कि जिसको अपनी फूट के कारण ही अपना राज्य भाग खोये अभी बहुत समय व्यतीत नहीं हुआ था। अंग्रेजों ने किसी बहाने जहाँ नामधारियों को कुचलने का यत्न किया वहाँ इनके मुकाबले में दूसरे सिक्खों को उभारने का भी प्रयत्न किया और उनको हिन्दुओं से अलग करने में भी बहुत हद्तक सफलता प्राप्त की और इस तरह भारत मां के शरीर पर एक

ऐसा घाव लगाया कि जिसकी पीड़ा पंजाब प्रान्त को आज भी सहन करनी पड़ रही है। ऐसे सिक्खों में कई ऐसे धार्मिक सिधान्त कि जो गुरुनानक देव जी के आशा के अनुकूल नहीं हैं फैलाने में सहायक हुये ताकि सिक्खों में भी बुनियादी विरोध प्रगट हो जाय और समूचे सिक्ख कौमी भी संगठित हो कर अंग्रेजी सरकार का विरोध न कर सकें।

अंग्रेजी राज्य के साथ नामधारियों की असहयोग (Non-co-opration) की मिसाल देश में और कहीं भी नहीं मिलती नामधारियों ने विदेशी सरकार का हर प्रकार से बाई-काट कर रक्खा था। नामधारियों की चिट्ठियां विदेशी सरकार के डाकखानों द्वारा नहीं जाती थीं वरन् अपनी डाक का प्रबन्ध नामधारियों ने स्वयम कर रक्खा था और इतनी कड़ी पाबन्दी के होते हुये भी वह अपनी डाक को पूर्ण सफलता के साथ कई २ सौ मील दूर तक बसने वाले नामधारियों तक बड़ी सुगमता से पहुँचा देते थे। सरकार ने नामधारियों की डाक पकड़ने के लिये हजारों लाखों रुपये का खर्च भी किया और C. I. D. के द्वारा भी बहुत प्रयत्न किये मगर उनको बहुत कम सफलता प्राप्त हुई। अखिल भारतीय नेशनल कांग्रेस से बहुत पहिले ही सब के सब नामधारी शुद्ध खद्दरधारी थे इन्होंने अंग्रेजी सरकार की अदालतों का सौ प्रतिशत सफलता के साथ बाईकाट कर रक्खा था। बहुत से नामधारी रेलों पर सवार नहीं होते थे और ऐसी मिसालें वास्तव में हैं तो गिनती की ही मगर ये अति सुन्दर और अद्वितीय हैं कि कई नामधारियों

ने अपनी आयु भर विदेशी सरकार की बनाई हुई सड़क पर पैर नहीं रक्खा, सड़क के किनारे लगाये गये पेड़ों की छाया में नहीं बैठे और अंग्रेजों द्वारा खुदवाई गई नहरों के पानी को हाथ से नहीं छुआ। १८५७ से लेकर १४ अगस्त १९४७ तक ९० वर्ष के समय में अंग्रेज सरकार अपने धन दौलत, सरकारी पदों तथा जागीर आदि के लालच देकर या किसी अन्य कूटिनीति से भी कभी किसी नामधारी को भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के विरोध के लिये खड़ा कर सकने में सफल न हो सकी और इसके लिये हर नामधारी का सिर अभिमान से ऊँचा है।

स्वतंत्रता संग्राम के साथ नामधारी समाज का जो सम्बन्ध रहा है। इसको विस्तार पुर्वक लिखने के लिये तो कई हजार पृष्ठ चाहिये और जो अवश्य ही किसी समय आपके सामने आने वाले हैं। मगर मुझे यहाँ नामधारी सिक्खोंके कुछ धार्मिक तथा सामाजिक सिद्धान्तों के बारे में केवल परिचय देना है।

❀ अवतार वाद ❀

लग भग पांच सौ वर्ष पहिले के भारत का इतिहास रोमांचकारी अति हृदय विदारक घटनाओं से भरपूर है उन दिनों में भारत भूमि वीर जननी की दुर्दशा अवर्णनीय है यवन राज जोरों पर था। हिन्दुओं को सब जगह सताया और दुखाया जाता था। यवन लोग हिन्दुओं की बहू बेटियों को छीन

कर लेजाते थे, इनके आये दिन के आक्रमणों से सोने की चिड़िया भारत जो अन्न, जन, धन पूरत थी। दीना दीन पराधीन होकर अपनी सुख सम्पत्ति और गौरव को खोकर अपने भाग्य को रोरही थी। और कोई भी दिन ऐसा नही आता था कि जो आराम और सुख शान्ति पूर्ण व्यतीत हो जावे। तैमूर, बाबर, नादिरशाह, अहमदशाह अब्दाली आदि आक्रमणकारियों ने लूटमार करके जनता को निढाल कर दिया था। इन आक्रमणों का असर सारे भारत पर हुआ परन्तु फिर भी सबसे अधिक प्रभाव तो पंजाब प्रान्त पर ही पड़ा और पंजाब में एक कहावत बन गई थी जो ठीक भी थी कि "खादा पीता लाहे दा ते रैंहदा अहमदशाहेदा" भाव यह कि जो कुछ खालोगे वही अपना है जो बचाओगे वह अहमदशाह का होगा। उस समय के चित्र को "पंथ प्रकाश" के रचियता ज्ञानी ज्ञान सिंह जी★ ने इस तरह चित्रित किया है :—

सैय्यद शेख, मुगल पाठान। जालिम भये सभी बलवान।
हिन्दुन को दुःख दयो महाये। देवन के मन्दिर गिरवाये॥
वीर नाथ से अवघड़ साधू। पन्डित दत्त से सुमति अगाधू।
केचित कच्चे चाम मढ़ाए। केचित कुत्यों से तुड़वाये॥
तुर्क होवना जिन्हें न मान्यो,
तिन तिन को अति दुख दे हान्यो।

★ पंजाब के प्रसिद्ध इतिहासकार जिन्होंने सिक्ख इतिहास को अति सुन्दर कविता में लिखा है।

यग्ग, हवन कोई करन न पाये,
करै जो ताहि दुख देत महाये।
सुन्दर पिखैं जाहि की तरनी,
पकरि करैं बल सों निज घरनी॥
काजी रिसवत लै कर सारे,
सांचे को झूठा कर डारैं।

उस समय न्याय की अति दुर्दशा थी वह लोग जिनको न्याय करने के लिये नियुक्त किया जाता था वह स्वयं घूस लेकर सच्चे को झूठा कर देते थे सिन्ध प्रान्त के इतिहास में लिखा है कि एक बार सिंध के अमीर ने एक अदालती काज़ी से पूछा कि काज़ी साहिब क्या आप घूस लेते हैं तो इसके उत्तर में काज़ी ने कहा कि मुझे तो केवल मुदयी और मुदालय से ही कुछ मिलता है मगर गवाह तो बगैर कुछ दिये ही चले जाते हैं।

जब संसार की ऐसी हालत हो गई तो दुखी हुई भूमि ईश्वर के चरणों में प्रार्थिक हुई और अवतार वाद के अटल सिद्धान्त कि जिसको गीता के अन्दर भगवान श्री कृष्ण ने इस तरह प्रगट किया है कि—

.... संभ्वामी युगे युगे।

भाव यह :—

ग्लानी धर्म की होती है जब अवतार होता है।
गुनाहों का जमाना पाप में संसार होता है॥
तो ठोकर से महा पुरुषों का बेड़ा पार होता है।

अयाँ इस वक्त कोई हस्तिये पुरनूर होती है ॥
तो पापों की स्याही नूर से काफूर होती है ।

इस सिद्धान्त को अपनी वाणी में श्री गुरु नानक देव जी ने इस तरह मनन किया है :—

हरि जुग जुग भगत उपाया, पैज रखदा आया राम राजे ।
जब जब होत अरिष्ट अपारा, तब तब देह धरत अवतारा ॥

तथा

सतयुग तै मान्यो छल्यो बलि बावन भायो ।
त्रेता तै मान्यो राम रघु वन्श कहायो ॥
द्वापर कृष्ण मुरार, कंस कृतारथ कियो ।
उग्रसेन को राज अभय भक्तै जन दियो ॥
अब कलियुग प्रमान नानक अंगद अमर कहायो ।
श्री गुरु राज अविचल अटल आदि पुरखं फरमायो ॥

इसी अटल नियम के अनुसार—

आप नारायण कलाधार जग में परवरयो ।

—(गुरुवाणी)

भगवान ने गुरु नानक देव जी के रूप में अवतार लिया-

भई अधिक जब ऐस विरामी,
तब विचार ईश्वर जग स्वामी ।
पालन हेतु सनातन नेतै,
वैदक धर्म रखन के हेतै ॥
आप प्रभू गुरु नानक रूपं,
प्रगट भये जग में सुख भूपं ॥

❀ सिक्ख धर्म ❀

जब श्री सतगुरु नानक देव जी ने अवतार धारण किया उस समय की अवस्था को उन्होंने अपनी स्वरचना में इस तरह प्रगट किया है :—

कलकाती राजे कसाई धर्म पंख कर उडरया ।
कूड़ अमावस, सच, चन्द्रमा दिसे नाहिं कह चढ़्या ॥
हौ भाल विकुन्नी होई,
अंधेरे राहो न कोई ।
विच होमै कर दुःख रोई,
कहो नानक किन विध गति होई ॥

उस समय धार्मिक संसार में सब ओर अंधेरा था जो कोई सिद्ध पुरुष कहीं थे वह तो पर्वतों में छुपे बैठे थे और अन्य लोग धर्म के वास्तविक रूप को न समझते हुए उसी के पाखण्ड रूप को ही धर्म माने हुए थे। श्री गुरु नानकदेव जी ने देश देशान्तर में भ्रमण करके और धार्मिक लोगों के पास पहुँच कर उनको पाखन्ड से बचने और धर्म के असली रूप को ग्रहण करने का उपदेश दिया। दया, धर्म, सत्य, सन्तोष, यज्ञ-हवन आदि श्रेष्ठ गुणों का प्रचार किया। श्री गुरु नानक देव जी वैदिक धर्म के सिद्धान्तों के साथ साथ हर व्यक्ति के लिए गुरू की शरण में आना आवश्यक समझते थे। वेद शास्त्र आदि में बतलाये गये सभी कर्मों में "नाम" को सर्वोत्तम मानते थे और गुरू जी का सिद्धान्त है कि नाम की प्राप्ति धार्मिक पुस्तक पढ़ने से या

अन्य किसी यत्न से भी नहीं हो सकती वरन् 'नाम' केवल मानुष देह धारी सतगुरु से ही प्राप्त हो सकता है और इसी का प्रचार करते थे इसलिये इनके शिष्यों का नाम ही सिक्ख (या शिष्य) प्रचलित हो गया। इस तरह "सिक्ख पंथ" रूपी मनोहर पौदा लगाया गया।

गुरु नानकदेव जी के बाद इस "सिक्ख पंथ" रूपी पौदे को इसी शकल में कायम रखने के लिये उनके उत्तराधिकारी आठ गुरुओं ने अपने खून से सिंचन किया और ६ वें गुरु श्री गुरु तेजबहादुर जी ने (जो गुरु गोबिन्द सिंह जी के पिता थे) वैदिक धर्म, तिलक और जनेऊ की रक्षा करने के लिये दिल्ली में जाकर अपना शीश दिया। जिसको श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपनी लेखनी द्वारा इस तरह प्रगट किया है—

तिलक जंञू राखा प्रभु ता का,
कीनो बड़ो कलू मह साका।
धर्म हेतु साका जिन किया,
शीश दिया पर सिरर न दीया॥
साधन हेतु इती जिन करी,
शीश दिया पर सी न उचरी॥

❀ यज्ञ हवन ❀

अब सिक्ख पंथ की बागडोर श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने संभाल ली। आपकी धर्महितकारिणी, महापरउपकारिणी,

पावन त्रिकालग्य तथा सर्वग्य दृष्टि ने ऐसा अनुभव किया कि अगर हिन्दू जाति की अवस्था ऐसी ही रही तो वह दिन दूर नहीं कि जब यवन इसको समूल ही नष्ट कर देंगे। हिन्दू जाति मुर्दा सी हो चुकी है इसकी जातीयता इसमें नहीं रही, स्वाभिमान, स्व सत्कार और निज गौरव खो बैठी है, इसके धर्म मन्दिर मिट्टी में मिला दिए गए हैं, इसकी बहू बेटियों की बेइज्जती हो रही है, भारत के सपूत गजनी के बाजारों में टके टके में बिक रहे हैं और यह सब कुछ हिन्दू जाति के आंखों देखते हुए हो रहा है और फिर भी यह सबकुछ सहन कर रहे हैं कोई उफ तक नहीं करता। इसलिये श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने इसका बचाव ही अपना कर्तव्य समझा :—

ऐहै काज धरा हम जनमं,
समझ लैहु साधू सब मनमं ।
धर्म चलावन सन्त उबारन,
दुष्ट सबन को मूल उपारन ॥

इस मनोहर सिखी रूपी पौदे को (जिसकी जड़ गुरु नानक देव जी ने लगाई थी) और अधिक हरा भरा और सुहावना बनाने के लिये इसमें शूर वीरता की प्योंद लगाने हेतु नैना देवी पर्वत पर सवा लाख रुपये की सामग्री से यज्ञ हवन आदि उग्र तप किया और सम्वत १७५६ विक्रमी को अमृत छकाकर चार वर्ण के हिन्दुओं को एक प्रेम सूत्र में पिरो दिया। जिसके संगठन ने भारत की काया ही पलट दी। इस जत्थेबन्दी का नाम गुरू

की फौज अथवा खालसा रख दिया गया और इसको इसका कर्तव्य यही बतलाया गया :—

धर्म चलावन संत उबारन, दुष्ट सबन को मूल उपारन।

श्रीमान भाई संतोष सिंह जी अपने रचित 'सूर्य प्रकाश' में लिखते हैं कि अगर गुरू जी उस समय ऐसा न करते तो—

छाय जाती एकता, अनेकता बलाय जाती,
धाय जाती कुचलता, कतेबन कुरान की।
पाप परपक जाते, धर्म धसक जाते,
वर्ण गरक जाते सहत विधान की॥
देवी देव देहुरे संतोष सिंह दूर होते,
रीत मिट जाती कथा वेद औ पुरान की।
श्री गुरु गोबिन्द सिंह पतित पावन शूर,
मूर्ति न होती जो पै करुणा निधान की॥

गुरूजी तो अवतरित ही इसी लिये हुये कि अलोप हो चुकी यज्ञ हवन की मर्यादा को नये सिरे से स्थापित किया जावे आपके आगमन सम्बन्धी भाई गुरुदास जी लिखते हैं—

कूर कपट सब छिप गया, सब सच वरतारा।
फिर यज्ञ होम ठहराय कर निज धर्म संवारा॥

इसी सन्बन्ध में चीफ खालसा दीवान के प्रसिद्ध उपदेशक भाई हरनाम सिंह जी ने लिखा है :—

यज्ञ होम होवना ना हिन्द में कोई मूल पाता।
भूलते निशान नाहीं आज हिन्दुआन के॥

कहत हरनाम सिंह इसमें न झूठ जानों ।
तीर जो न छूटते गोविन्द सिंह ज्वान के ॥

गुरू जी ने जहाँ सवा लाख रुपये की सामग्री से नैनादेवी के मन्दिर के सामने हवन किया वहाँ पंडित केशवदास जी के पूछने पर कि इस हवन से क्या लाभ होगा अपनी अनुमति इस ढंग से प्रगट की—

यह तो धर्म हमारा सार, करत रहे निरप मुनि अवतार ।
सो तो हम भी करना चाहैं, जाते सब सृष्टि सुख पाहैं ॥
इक तो है दुर्भिख अति भारी, है पड़ रहो न बरसत वारी ।
दूसर भारतवर्ष मंझारे, महामारी पड़ रही अपारे ॥
तृतिये जो नर नारी आरज, हो रहे निज धर्मों खारज ।
पाप कुकर्मन में अति लागे, इर्षा हेत बन रहे अभागे ॥
जग्ग होम लौ सुकृत जैहैं, हाकम तुर्क करनि नहि दैहैं ।
हम अब हवन यज्ञ करवैहैं, खुश हो घन जल बहु बरसैहैं ॥
दुर्भिख नसै अन्न बहुथैहै, सुकृति सब करने लग जैहैं ।
नसै अविद्या विद्या ऐहै, सूर वीरता दृढ़ प्रगटैहै ॥
वर्णाश्रमी जन हैं जेते, कायरता कर पूरन तेते ।
उन्हें हवन की पवन लगै जब, शेर बध्यारन से ह्वै हैं सब ॥
सूर वीरता उर में जगिहै, धर्म पुरातन करने लगिहैं ।
प्रभुता देह अरोग्य क्रान्ती, विजय ज्ञान संतित सुखदाती ॥
निर्भयता जस गुण दैवी सब, ह्वैहै प्राप्त गुरू घर में तब ।
बालक भाग्यवान प्रगटैहैं, रोग शीतला आदि नसैहैं ॥
कामादिक जो असुरी सम्पत्ति, यज्ञ होम को पिख कर कंपति ।

उत्तम गुण सत्य आदिक जे हैं वाचन कहे वेद ऋग में हैं ॥
सो अवश्य जग में प्रगटै हैं, होम–यज्ञ विधिवत जब थै हैं ।

(पंथ प्रकाश) संस्करण ६

श्री गुरू ग्रन्थ जी में श्री गुरु जी फरमाते हैं—"तित थिय होम यज्ञ सद पूजा पैख्यौ कारज सोहै" और भाई गुरुदास जी की वाणी में (जिस वाणी को गुरू जी ने गुरुवाणी की कुन्जी होने का मान दिया है) में तो घी की उपमा ही केवल इसलिये की गई है कि उससे यज्ञ हवन जैसे श्रेष्ठ कर्म होते हैं यथा—

गाई रंग विरंग वहु, दुध उज्जल वरन ।
दुधों दही जमाइये, कर निहचल धरना ।
दही विलोय अलोय कर छाह मक्खन करना ।
मक्खन ताय ओटाय के घी निर्मल करना ।
घी ते होवन होम-यज्ञ सब कारज सरना ।

इन उपरोक्त प्रमाणों द्वारा भली प्रकार सिद्ध हो जाता है कि गुरू जी का अवतार केवल धर्म को दृढ़ करने और यज्ञ हवन आदि की मर्यादा को अहों स्थापित करने के लिये ही हुआ था ।

गुरू रामसिंह अवतार

गुरू गोविन्द सिंह जी के पश्चात जब तक तो खालसा गुरू जी के दर्शाये उपरोक्त सिद्धान्तों पर दृढ़ता के साथ चलता रहा। इसकी दिन दुगनी और रात चौगुनी उन्नति होती रही परन्तु जब खालसा को राज भाग प्राप्त हुआ और साथ ही इसके सामने कोई धार्मिक नेता न रहा तो इसने गुरू जी के पावन उपदेश 'धर्म चलावन संत उबारन दुष्ट सबन को मूल उपारन' को न केवल भुला ही दिया वरन स्वयं ही संतों को दुख देने का कारण बन गया। खालसई फौज ने नाम सुमिरन में लव लीन भाई वीर सिंह जी और गाबादिया को तोपों स उड़ा कर बड़े मान के साथ यह शब्द कहे कि "वीर सिंह जेहे असां, मार दित्ते नहीं छडना, साध ते सन्त मियां" भाव ये कि हमने वीर सिंह जैसे हरिनाम प्रेमी को मारदिया है तो हम किसी दूसरे साधू सन्त को भी जीवित नहीं रहने देंगे। खालसा अपने धर्म से भ्रष्ट होगया और देश, में सुखके बजाय दुख का कारण बनगया। सारे पंजाब में गुन्डा गर्दी का जोर होगया और खालसा राज्य (अथवा सिक्खा शाही नादिर शाही की तरह) बदनाम होकर नष्ट होगया।

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी के पश्चात बावे बन्दे के समय तक तो खालसा अपने सिद्धान्त तथा यज्ञ हवन आदिक मर्यादा

का पालन ठीक २ करता रहा यथा —

श्री गुरू दश मेसैं यन्दे पर्यन्त वे अन्त,
सिंहथिये जोऊ सोऊ चाला ऐस थे चले।
तन मन धन तिन अर्प्यो गुरू हेतु,
राखवे को हिन्द जिन्द देन चाहे थे भले।
लोभ राज साज का व्याप्यो दराज तिनै,
समरैं पै कमरैं कसी थीं अमरैं वले।
जस, सत तप जप तोख धरी, पर उपकारी पारी,
गरु सिक्खी वारी सह कै कले।
पर त्रिया मात धीया भगनी लखैया करैं,
बीया वित हेर किया हिया न चुराणे थे।
पालते परन सरनागतैं सिदीव द्रिड,
हरण अरिन ढिग मरन पछाणें थे।
राखते भरोसा पूरा गुरु करतार पर,
निज करनी को नीको ना हँकार ठाने थे॥
नाम के जपैया देग तेग के चलैया,
हरी ज्ञान दान दैइया सिंह छाणें न पुराणे थे।
वस्त्र थोर भूर शस्त्र छत्रधारी शूर,
बख्तर अंग जंग बकत सों धारते।
सूघे दाड़े मुच्छे अच्छे दस्तारे श्वेत,
स्वच्छ कटि प्रतच्छ पट देह धारते॥
अंगरखे गर भुरे गलती कमरे कसे,
नादरैं मृगेश खेश चादरैं की धारते।

अम्बरी पिगम्बरी अजीबका रखत ओढ़,
कम्बरी से पम्बरी की छवि छीन डारते ॥
कीर्तन कथा पाठ गुरु ग्रन्थ जी के,
थाट जोड़ मेल ठाट राट काठ मेल ठाणी थे।
होम यज्ञ करवाते परसाद बटवाते,
रौनक रखाते गाते शब्द जबानी थे ॥
देते जो किसान आन लेते सिंह मोद मान,
बेते ब्रम्ह ज्ञानी ते उपासक महानी थे।
दानी थे इमानी थे गुमानी वीर मानी थे,
सो देव गन सानी थे बदेही सम ज्ञानी थे ॥

यज्ञ हवन में पीत करने वाला सत और उदाचार से प्रेम करने वाला खालसा बारह मिसलों में बंट गया। परस्पर प्रेम और मैत्री का भाव नष्ट हो गया अपने खून की बलि देकर प्राप्त किया हुआ सिक्ख राज्य समाप्त हो गया और सूर बीरों की धरती पर विदेशी सरकार की ध्वजा (Union Jack) लहराने लगी। इस समय की सिक्खी का चित्र ज्ञानी ज्ञान सिंह जी इस प्रकार लिखते हैं :—

औरैं रीत औरैं मीत परतीत प्रीत,
खान पहिरान ज्ञान मान औरैं जन के।
डारे दस्तारे साफे भारे हैं सम्हारे,
अच्छैं कच्छैं तजि गये धोती सुत्थू तंग तणिकै ॥
धारे हैं गरारे लम्बे तुरक अधिक लम्बे,

जिन्है देख सिक्खी गऊ कम्पै तुर्क गणिकै ।
सिक्खी दसमेस की सो की अपरदेश की,
अमिक्खी परी पेशगी छिनार बणि ठणिकै ॥

जब सिक्ख अपने धर्म को भूलकर कुकर्मों में फंसगये तो सिक्ख पंथ पर धार्मिक पतझड़ आगई और सिक्खी पौदा मुरझा गया । श्री गुरु ग्रन्थ साहब को अलमारियों में रक्खे ही दीमक लग गई और गुरुवाणी का अध्ययन करना सिक्ख भूल गये ऐसे धुन्धूकार विकराल समय में दुखी हुई धरती एक बार फिर ईश्वर के चरणों में प्रार्थक हुई । कवि चेतन जी लिखते हैं—

गुरु दशमेश जी दे पिच्छों, जदों खालसे ने,
छड दित्ता राह ते कुराह आण मल्या ।
बुर्छियांने लुट मार देश विच खुब कीती,
निर्बलां निर्दोसियां गरीबानु दवल्या ॥
अत्तदा ते रबदा है बैर मशहूर धुरों,
वाहि गुरु ने इना दा वी तख्ता उथल्या ।
फेर कलियुग बिच सतयुग लांण लई,
ओसे जोत निज रूप रामसिंह घल्या ॥

धरती और गाय गरीब तथा सिक्खों की पुकार सुनकर सतगुरु रामसिंह जी भारत के दुख निवारणार्थ सम्वत् १८७२ विक्रमी तिथी माघ सुदी पंचमी वाली रात्रि को भैनी नामक ग्राम जिला लुधियाना पंजाब में अवतरित हुये । जो गुरु नानक जी की गद्दी पर बारवें गुरु हुये हैं ।

❀ संका समाधांन ❀

यहाँ यह बात बता देनी आवश्यक जान पड़ती है कि कई सिक्ख ऐसा विचार करते हैं कि गुरु गोबिन्द सिंह जी ने गुरु गद्दी गुरु ग्रन्थ साहिब को अर्पण की थी और यह अति आश्चर्य है कि कई पढ़े लिखे सिक्ख भी ऐसा कहते हुए सुने जाते हैं कि श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने पाँच पैसे और एक नारियल गुरु ग्रन्थ साहिब जी के सामने रखकर माथा टेक दिया और श्री गुरु नानकदेव जी से चली आ रही इस रीति के अनुसार गुरु गद्दी गुरु ग्रन्थ साहिब को सौंप दी। इतना कहते हुये शायद वह निम्नलिखित बातों का विचार नहीं करते हैं।

(१) सिक्ख इतिहास में प्रमाणित किसी भी पुस्तक में इसका सबूत नहीं मिलता।

(२) गुरु ग्रन्थ साहिब, दशम् गुरु ग्रन्थ साहिब, भाई गुरुदास जी की बाणी आदि में भी इसका कोई प्रमाण नहीं है।

(३) पांचवें गुरू गुरु अर्जुनदेव जी ने जब से गुरुबाणी को संचित करके गुरु ग्रन्थ साहिब की बीड़ बना दी तो उसी समय से इसका सिंहासन अपनी गद्दी से ऊँचा रक्खा और इसके बाद सभी गुरुओं ने इस मर्यादा का पालन किया और नियम अनुसार गुरु गोबिन्द सिंह जी भी गुरु ग्रन्थ साहिब का सिंहासन अपनी गद्दी से ऊँचा रखते थे। जब गुरु जी गुरु ग्रन्थ साहिब के सामने आते या वहाँ से अलग होते तो पूरे आदर सम्मान के साथ अपना मस्तक टेका करते थे, फिर गुरु गद्दी

अर्पण करने के लिये गुरु ग्रन्थ साहिब के सामने मस्तक टेकने का कुछ भाव ही नहीं रह जाता और यह बात कुछ विचित्र सी मालुम देती है कि एक ऊँचे सिंहासन से उठाकर अपने सिंहासन अथवा गुरुगद्दी पर बिठा देने में गुरु ग्रन्थ साहिब को कौन सा मान दिया गया। पहिले गुरुओं के समय तो यह अवस्था थी कि अपने उन शिष्यों में से उस योग्य शिष्य को जिसके अन्दर अपनी ज्योति का पूर्ण प्रकाश प्रज्वलित कर देते थे। उसके सामने पाँच पैसे और एक नारियल रखकर मस्तक टेक कर गुरु गद्दी अर्पण की जाती थी। इससे पहिले तो सदा शिष्य ही गुरू जी के सामने मस्तक टेका करते थे। परन्तु गुरू जी का शिष्य को मस्तक टेकना अप्रमाणिक है मगर यहाँ गुरु ग्रन्थ साहिब के बारे में तो अवस्था ही इसके विपरीत है और इस बात में इसलिये भी सच्चाई प्रतीत नहीं होती कि गुरु ग्रन्थ साहिब की जिस बीड़ के सामने पाँच पैसे और नारियल रक्खे गये बतलाये जाते हैं संसार में इसका अभाव है। इतिहास में इसका कहीं प्रमाण नहीं मिलता।

(४) गुरु ग्रन्थ साहिब में बतलाये गये गुरू के लक्षण केवल मानुष देहधारी में ही पूरे उतर सकते हैं, अन्य कहीं भी नहीं।

❀ नाम प्रचार ❀

वेद शास्त्र गुरु ग्रन्थ साहिब और दूसरे धार्मिक ग्रन्थों में "नाम" को ही मुक्ति का एक मात्र साधन माना गया है।

सतगुरु रामसिंह जी ने 'नाम' का प्रचार इस ढंग से किया कि जो भी सतगुरु जी के शरण में आया नाम सुमिरन में लवलीन हो गया। सतगुरु जी ने सिक्खों के नित्य कर्मों में नाम को ऐसा स्थान दिया है कि उनके जीवन का आधार ही नाम बन गया। इसलिए ही गुरु रामसिंह जी की शरण में आने वाले सभी सिक्खों का नाम नामधारी सिक्ख पड़ गया।

❁ मांस मदिरा विवर्जित ❁

इसमें संदेह नहीं कि बहुत से सिक्ख माँस मदिरा आदि का सेवन बगैर किसी संकोच के करते हैं और जब माँस प्राप्त करने के लिये वह किसी जीव का वध करते हैं तो गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखे इन वाक्यों को भूल जाते हैं :—

रोज़ा धरे नमाज़ गुज़ारे,
स्वादत जीव संघारे ॥

अगर वह यह कहें कि माँस खाना सिक्खों का धर्म है। जैसा कि वह लोग अक्सर कह देते हैं तो उनकी इस दलील को भी गुरु ग्रन्थ साहिब की बाणी में सौ प्रतिशत सफलता के साथ रद्द कर दिया गया है। जब तक धरती और आकाश रहेंगे और गुरु ग्रन्थ साहब की बाणी लोगों का पथ प्रदर्शन करती रहेगी उसमें यह वाक्य स्पष्ट लिखे हुए मिलेंगे :—

जीव वधो सो धर्म कर थाप्यो, अधर्म कहो कत भाई ।
आपस को मुनिवर कर थाप्यो, काको कहो कसाई ।।

भाव यह कि जीव को वध करना जो महान पाप और अधर्म है तो तुमने किसी न किसी शकल में धर्म का अंग बना लिया अब अधर्म किसको कहोगे । इतने अधर्मी होते हुये भी अपने आपको खालसा श्रेष्ट पुरुष, मौलाना, या धर्मी मानते हो तो तुम्हीं बतलाओ कि फिर कसाई या अधर्मी किसको कहा जावेगा। क्या तुम्हीं मांस खाने वाले तो अधर्मी नहीं बन गये ? फिर गुरु वाणी तो पुकार २ कर कह रही है।

भांग सुरापान माछली जो जो प्राणी खाय।
तीरथ व्रत, जितने किये सबै रसातल जाय ॥

इत्यादिक अनेक प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध किया जा सकता है कि सिक्ख धर्म में मांस और मदिरा बिलकुल विवर्जित है। सतगुरु रामसिंह जी की कृपा से नामधारियों में तो एक भी सिक्ख ऐसा नहीं मिलेगा कि जो मांस मदिरा आदि का सेवन करता हो वरन् नामधारी बनने के लिये तो सबसे पहिले मांस और मदिरा के त्याग का ही प्रण लिया जाता है।

सामाजिक सुधार

सतगुरु रामसिंह जी महाराज ने धार्मिक प्रचार के साथ २ सामाजिक बुराइयों को भी दूर कर दिया है। इस छोटी सी पुस्तक में इनको विस्तार पूर्वक लिखना बहुत कठिन है। नाम धारी सिक्ख इन सामाजिक सुधारों को धर्म का अंश मान कर

इस पर पूर्ण दृढ़ता से अमल कर रहे हैं।

नामधारियों में छोटी उम्र में लड़के या लड़कियों की शादी नहीं होती है नाहीं लड़की या लड़के की किसी रूप में भी कीमत वसूल की जाती है। अदला वदली (या वट्टे) की शादी भी मना है। मौजूदा सतगुरु श्री सतगुरु प्रताप सिंहजी महाराज ने तो व्याह शादी के बाकी बचे बुरे रवाजों को बिलकुल ही खत्म कर दिया है। और आज नामधारी लड़की या लड़के की शादी को निसंकोच आदर्श विवाह माना जा सकता है। यह विवाह बहुत बड़ी संख्या की उपस्थिति में बड़ी धूम धाम के साथ केवल बीस आना के खर्च करने से हो जाता है। इस विषय में यहां केवल संक्षिप्त रूप में इतना ही बता देना पर्याप्त होगा।

श्री सतगुरु प्रताप सिंह जी महाराज

नामधारी सिक्ख सम्प्रदाय को इस बात का मान है कि उनकी सरपरस्ती श्री सतगुरु प्रताप सिंह जी महाराज कर रहे हैं श्री सतगुरु जी के हृदय में विश्व शान्ती की लगन समाई रहती है और इसके लिये वे निरन्तर जपयग्य रचाये रहते हैं गाय तथा गरीब का दुःख उनके कोमल और पवित्र हृदय को सदा पीड़ित करता है। महाराज जी का सहयोग भारत के "गौ वध बन्द हो" आन्दोलन के प्राण हैं श्री सतगुरु जी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अखिल भारतीय नेशनल कांग्रेस को सहयोग दिया है और इस सहयोग को राष्ट्रपिता गांधी जी एवं देश के महान नेता पं० जवाहर लाल जी नेहरू ने सदा ही मान दिया है। आपके गुण अकथ हैं। इति

धन्यवाद

इस पुस्तक की एक हजार कापी जनता में मुफ्त बांटने के लिये सर्व श्री न्यु नामधारी फैन्सी सिल्क स्टोर बादशाही नाका कानपुर ने इसका समस्त खर्च धर्मार्थ दान दिया है। नामधारी सभा कानपुर धन्यवादी है।

This book can be had from :–

New Namdhari Fancy Silk Store

BADSHAHI NAKA, KANPUR.

Eastern Press, Feelkhana, Kanpur.